यन्तृ *m.* (r. यम् refraenare s. तृ) auriga. N. 20. 18.

यन्त्र *n.* (r. यम् s. त्र) machina, machinamentum, compages. Bh. 18. 61.

1. यम् 1. *P. interdum A.* (in tempp. special. यच्छ्, gr. 328.; praet. mtf. अयंसम्, fut. aux. यंस्यामि, part. pass. यत) refrenare, cohibere. रश्मीन् habenas. N. 20. 15.: रश्मीन् यच्छतु वाजिनाम्। — हयान् flectere, moderari equos. In. 1. 19.: हयान् येमेच रश्मिभिः। — रथम् currum flectere. A. 4. 32.: अपश्यं हरियुजं रथम् ... यतम् मातलिना। 2) dare. Hit. 59. 2.: अभयवाचम् मे यच्छ; Man. 2. 55.: पूजितं ह्य् अशनन् नित्यम् बलम् ऊर्जञ्च यच्छति। 3) *A.* prehendere, sumere (sibi dare, v. दा praef. आ). Rigv. 52. 8.: अयच्छथा बाह्वोर् वज्रम् आयसम्। (Cf. gr. ζημία, ἥμερος; lat. *jējūnus* ad Intens. यंयम् referri posset; Pottius apte huc trahit *emo* proprie sumo, quod e *sub-imo, ex-imo*; *demo* e *de-imo*; fortasse *premo* ex *pra-imo* = प्रयम्; lith. *immu* sumo, per assimil. ex *imju*, v. gr. comp. 501., praet. *ēmjau*, fut. *im-su*; slav. *imamj* habeo; russ. *imaju* capio, deprehendo; fortasse goth. *NAM* sumere (*nima, nam, nêmum*) ex praep. *in*, abjecto *i* et *AM* pro *JAM*; hib. 1) *iomainim* «I drive, toss, twirl», 2) *iomainim* «I force, compel, oblige»; scot. *iomain* «a driving, act of driving or urging».)

c. आ extendere, v. आयत longus. *Atm.* Sak. 73. 4.: स्वाङ्गम् आयच्छमानः — धनुस् arcum intendere. Mah. 3. 8665.: धनुर् आयच्छ।

c. आ praef. निस् extendere. Sak. 4. 17.: निरायतपूर्वकायाः ... वाजिनः।

c. आ praef. वि extendere, व्यायत longus. Ragh. 3. 34. *Atm.* se extendere, vires contendere, niti, conniti. Mah. 3. 12740.: इदं श्रेयः परमम् मन्यमाना व्यायमन्ते मुनयः।

c. उत् 1) tollere, extollere, sublevare. Bh. 5. 20.: धनुर् उद्यम्य; Dr. 9. 1.: भ्रातराव् उद्यतायुधौ; R. Schl. I. 28. 2.: उद्यम्य बाहू। 2) offerre. R. Schl. I. 52. 14.: सत्क्रियां हि भवान् एताम् प्रतीच्छतु मयो 'द्यताम्। 3) contendere, operam dare, niti, studere. Bh. 1. 45.: हन्तुं स्वजनम् उद्यताः; Ragh. 10. 50.: सुरकार्योद्यतम् ... विष्णुम्। — उद्यत festinans. N. 10. 25.: आतिष्ठद् उद्यतः (v. Subst. उद्यम). 4) luctari. Ur. 18. 12.: स्रोतसे 'वो द्यमानस्य (= उद्यममानस्य).

c. उत् praef. अभि 1) tollere, sublevare, extollere. Mr. 327. 5.: अभ्युद्यते शस्त्रे। 2) offerre. Man. 4. 247.: अन्नम् अभ्युद्यतम्।

c. उत् praef. सम् 1) tollere, sublevare, extollere. Dr. 9. 3.: समुद्यम्यच तम् भीमो निष्पिपेष महीतले; Mah. 1. 6278.: समुद्यम्य कराव् उभौ। 2) contendere, operam dare, studere. R. Schl. I. 14. 8.: इष्टिम् ... कर्तुं समुद्यतः। 3) *i. q. simpl.* sgf. 1. N. 19. 23.: अश्वान् ... रश्मिभिश्च समुद्यम्य।

c. उप 1. *A.* capere, sumere (sibi dare). Bhatt. 15. 21.: उपायंस्त महास्त्राणि। *Praesertim* uxorem accipere, in matrimonium ducere. Man. 3. 11.: नो 'पयच्छेत ताम् प्राज्ञः; Mah. 1. 1047.: भैक्ष्यवत् ताम् अहम् उपयंस्ये विधानतः; 3765. 3791. 5181. Etiam *Par.* Man. 11. 172.: एतास् तिस्रस् तु भार्यार्थे नो 'पयच्छेत्।

c. नि 1) opprimere, coërcere, cohibere. N. 20. 38.: न्यच्छत् कोपम् आत्मनः; Bh. 3. 7.: इन्द्रियाणि मनसा नियम्य; Bh. 7. 20.: प्रकृत्या नियताः स्वया; Ragh. 3. 45. — अश्वान् equos refraenare, domare. Mah. 4. 1953.: ना 'हं शक्ष्यामि ... नियन्तुन् ते हयोत्तमान्। — नियत demissus, submissus, humilis. Sa. 3. 5. 4. 11. 2) ligare, constringere. R. Schl. I. 13. 33.: पशूनान् त्रिशतन् त्व् आसीद् यूपेषु नियतम् (v. संयम्). *Trop.* नियत necessarius. Bh. 3. 8.: नियतङ् कुरु कर्म त्वम्। — नियतम् *Adv.* necessario, utique. Bh. 1. 44.: उत्सन्नकुलधर्माणाम् ... नरके नियतम् वासः। 3) celare. Man. 10. 59.: न कथञ्चन दुर्योनिः प्रकृतिं स्वान् नियच्छति। 4) adipisci. Man. 2. 93. et 12. 11.: ततः सिद्धिन् नियच्छति; 10. 93. 5) facere, perficere. Man. 5. 44.: या वेदविहिता हिंसा नियता।

c. नि praef. सम् *id.* sgf. 1. Bh. 12. 4.: सन्नियम्ये 'न्द्रियग्रामम्; Man. 2. 93.